

अखिलेश के अन्वेषण उपन्यास में युवाओं की समस्या एवं जीवन संघर्ष

उपेन्द्र कुमार
शोधार्थी, हिंदी विभाग
शहीद मंगल पाण्डे
राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ

प्रो० (डॉ०) स्वर्ण लता कदम
आचार्य, हिंदी विभाग
शहीद मंगल पाण्डे
राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 13-05-26
Approved: 29-06-26

उपेन्द्र कुमार
प्रो० (डॉ०) स्वर्ण लता कदम

अखिलेश के अन्वेषण उपन्यास में
युवाओं की समस्या एवं जीवन
संघर्ष

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.13, Pg. 078-081

Similarity Check: 04%

Online available at
<https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026>

DOI: <https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.013>

सारांश

अखिलेश, आधुनिक हिंदी कथा लेखन का बहुचर्चित नाम हैं। आपके सृजन का गतिक्रम अस्सी के दशक में आरंभ होकर अभी भी अनवरत् रूप से चलायमान है। अखिलेश ने अपनी लगभग पाँच दशकों की साहित्य सृजन यात्रा में अमूल्य साहित्य रचा है। आपने अपने उपन्यास साहित्य में भारतीय समाज की प्रत्येक संवेदना को ही अभिव्यक्त नहीं किया है अपितु उनके जीवन यथार्थ को भी रेखांकित किया है। दरअसल अखिलेश का साहित्यिक चेतस् अपने युग की संवेदनाओं से गहन रूप से संपृक्त है। आपकी अपने समाज से यही संबद्धता, आपके सृजन में संपुटित होती है। अखिलेश ने जिस युग को जिया व देखा है तथा वह जिन लोगों के बीच में जिये हैं; उन सब के जीवनानुभव उनकी लेखनी से अनुदृत हुए हैं। इसलिए आपका रचा हुआ साहित्य आम आदमी के जीवन के बहुत निकट से होकर गुजरता है। अखिलेश जब अपने लेखन में अपने आस-पास के परिवेश तथा उससे जुड़े हुए लोगों के बीच से अपने पात्र व कथ्य ग्रहण करते हैं तो वह मध्य वर्गीय भारतीय समाज के जीवन यथार्थ के रूप में प्रस्फुटित होता है। अखिलेश की कथा दृष्टि का यही वैशिष्ट्य उन्हें यथार्थ से जोड़ता है। आपके अब तक दो उपन्यास, पाँच कहानी संग्रह तथा कई अन्य गद्योत्तर पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। कथाकार अखिलेश की ख्याति का मूलाधार उनकी कहानियाँ ही हैं, किंतु उनके द्वारा लिखित उनके दोनों उपन्यास 'अन्वेषण' और 'निर्वासन' भी अपने कथानक के वैविध्य और विशिष्टता के कारण समीक्षकों, पाठकों का ध्यानाकर्षित करने में सफल रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र अखिलेश के 'अन्वेषण' उपन्यास पर केंद्रित है। इस शोध पत्र में अखिलेश के अन्वेषण उपन्यास में युवा बेरोजगारी की समस्या एवं संघर्ष का मार्मिक विवेचन हुआ है।

मुख्य शब्द : अखिलेश, अन्वेषण, युवा, बेरोजगारी, समस्या आदि।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

बेरोजगारी की समस्या समकालीन समय और समाज की भयावह समस्याओं में से एक है। यह केवल भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व परिदृश्य को अपनी चपेट में लिए हुए है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में तो इसकी भयावहता और अधिक व्यापक है। भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग इस समस्या से ग्रसित है। विशेषकर शिक्षित युवा वर्ग के समक्ष यह स्थिति और अधिक भयावह है। कथाकार अखिलेश ने भारतीय समाज में व्याप्त इन्हीं भयंकर स्थितियों और उससे जनित प्रभावों को अपने उपन्यास 'अन्वेषण' में धरातल प्रदान किया है। "कथाकार अखिलेश का पहला उपन्यास अन्वेषण दरअसल भयावह बेरोजगारी और कैरियरवाद के बीच व्यवस्था से जूझते उस संघर्ष और सरोकार की तलाश की कोशिश है जो कहीं दीप्त तो अपनी पूरी आभा के साथ है मगर उसके लापता हो जाने का खतरा सामने पेश है।" अपने इस उपन्यास में अखिलेश ने बेरोजगार युवाओं की जीवन त्रासदी का संपूर्ण लेखा-जोखा ही प्रस्तुत नहीं किया है अपितु उनके प्रति समाज एवं सत्ता के व्यवहार का भी विश्लेषण किया है। अखिलेश का यह उपन्यास बेरोजगार युवाओं की पीड़ा का महाख्यान प्रस्तुत करता है जिसमें हर एक पात्र बेरोजगारी के दंश से पीड़ित और अभिशप्त है।

'अन्वेषण' अखिलेश की प्रथम औपन्यासिक कृति है। इसका प्रकाशन वर्ष 1992 में राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ था। इस उपन्यास की थीम अखिलेश की 'चिट्ठी' कहानी की थीम पर ही आधारित है। अखिलेश ने जहाँ अपनी 'चिट्ठी' कहानी में बेरोजगार युवाओं की इलाहाबाद शहर में अंतिम विदाई बैठक का मार्मिक चित्र खींचा था, तो इस उपन्यास में इन युवाओं के संपूर्ण जीवनवृत्त में अंदर तक झाँका है। इस उपन्यास में उन्होंने गाँव, शहर और कस्बों के बीच इलाहाबाद का जो चित्र खींचा है, वह अस्सी-नब्बे के दशक का होकर भी आज का ही प्रतीत होता है। बेशक इस शहर की चकाचौंध में बहुत कुछ बदल सा गया है लेकिन अगर कुछ नहीं बदला है तो यहाँ रहकर तैयारी करने वाले युवाओं की जिजीविषा और सपने हैं जो कि बहुत कम लोगों के ही पूरे हो पाते हैं। बाकी बचे लोगों के हिस्से में संघर्ष व पीड़ा की अन्वरण यात्रा आती है जो कभी पूर्ण ही नहीं हो पाती। अखिलेश के अन्वेषण उपन्यास में ऐसे ही युवाओं की पीड़ा को धरातल प्रदान किया गया है।

अखिलेश के उपन्यास में मुख्य पात्र के शिक्षित होने के बाद भी रोजगार नहीं मिल पाता है जिसको समाज, परिवार और अपने मित्रों के सामने लज्जित होना पड़ता है। वह बेरोजगार होने के कारण माता-पिता के सामने जाने से भी कतराता है। "इतने वर्ष हुए, आज तक कभी माँ और पिताजी को कोई उपहार तक नहीं दे सका हूँ। माँ की कितनी इच्छा होगी कि मैं घर आऊँ तो मेरे पास उसके लिए रंग-बिरंगी साड़ी हो। पिताजी चाहते होंगे, सुबह सोकर उठें तो उनकी कलाई में एक चमचमाती घड़ी हो, जिसे मैंने अपनी कमाई से खरीदकर रात में चुपके से बाँध दिया हो। जब मैं एम.ए. फाइनल का इम्तहान देने बैठा, तो गर्मी के दिन थे। मैंने सोचा, नौकरी मिली तो शायद जाड़े के दिन होंगे। मैं पहले वेतन पर माँ के लिए मैरून रंग की एक कश्मीरी शाल खरीदूँगा और पिताजी के लिए सिलेटी रंग का बन्द गले के कोटवाला सूट सिलवाऊँगा। लेकिन इस बार भी मैं जाऊँगा तो हमेशा की तरह खाली हाथ जाऊँगा।" उपन्यास का यह कथन एक युवा बेरोजगार की बेबसी और संघर्ष को साफ तौर पर दर्शाता है।

भ्रष्टाचार समाज के लिए कितना घातक है, इसकी बानगी 'अन्वेषण' उपन्यास के पात्रों के जीवन में झाँककर की जा सकती है। उपन्यास के हर एक पात्र की यही जीवन त्रासदी है, जिसे वे झेलने को अभिशप्त है। उपन्यासकार अखिलेश ने उपन्यास की इस एक पंक्ति में उनकी जीवन त्रासदी को बयान कर दिया है "हमें ध्वस्त करने के लिए बस इतना ही काफी है कि कोई हमसे पूछे कि हम क्या कर रहे हैं?"³ सच भी यही था कि उनमें से कोई भी कुछ नहीं कर रहा था। सभी कुछ न कुछ करना तो चाहते थे मगर किसी को भी कोई काम मिला ही नहीं था। मगर फिर भी वे लोग जिंदा हैं, उम्मीद में है कि कुछ न कुछ तो अवश्य ही सकारात्मक होगा। इस संदर्भ में रेणु व्यास का कथन उल्लेखनीय है "अन्वेषण में युवा की आँख का सपना धूमिल है, पर मरा नहीं है। युवा बेरोजगार की पीड़ा का यथार्थ अंकन अन्वेषण उपन्यास की सफलता है किंतु इसी धुंधली आशा का अन्वेषण इस उपन्यास की सार्थकता है।"⁴ इस

तरह हम देखते हैं कि उपन्यास के सभी युवा पात्र बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं। वे शिक्षित व योग्य होते हुए भी एक अदृष्ट रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं। उपन्यास में बेरोजगार युवा रोजगार की तलाश में भटकते-भटकते कुंठा व अवसाद से ग्रसित हो रहे हैं। आज के समय में विद्यार्थियों में यह आम समस्या बन गई है। उपन्यास का पात्र 'मैं' और उनकी मित्रमंडली सभी शिक्षित बेरोजगारी का दंश झेल रहे युवा हैं; ये सभी पात्र कुंठित व अवसादग्रस्त प्रतीत होते हैं। युवा मन उत्साह और उमंगों से भरा रहता है। लेकिन बेरोजगारी ने उत्साह और उमंग के स्थान पर अवसाद भर दिया है। एक शिक्षित बेरोजगार युवा के लिए इससे बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है कि उसकी नौकरी पाने की उम्र खत्म होने वाली है और उसकी अभी तक कोई नौकरी नहीं लगी है। उपन्यास के केंद्रीय पात्र 'मैं' उस युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो युवा होकर अपने जीवन की असुरक्षा, कुंठा एवं निराशा की भावनाओं से ग्रसित है। उसे अपने जीवन को लेकर घोर निराशा है। भविष्य की चिंता ने उसमें डर, कुंठा, हताशा और निराशा की भावना उत्पन्न कर दी है कि उसे रोजगार प्राप्त नहीं होगा। यही चिंता उसे रात को सोने नहीं देती है। अन्वेषण उपन्यास में अखिलेश ने 'मैं' और उसके मित्रों की कुंठित मनोस्थिति का वर्णन किया है। उपन्यास के पात्र 'मैं' के मित्र सक्सैना और मुर्शिद भी बेरोजगार होने के कारण निराश और कुंठित रहते हैं और एक दोस्त देवेन्द्र अपनी बहन से अपमानित होकर निराश और हताशा के कारण आत्महत्या तक कर लेता है। "पिछले साल देवेन्द्र ने आत्महत्या कर ली। क्यों, कैसे...? मुझे लगा खून का बहुत बड़ा थक्का मेज पर आ गिरा हो और फड़फड़ा रहा हो। क्यों क्या, जिसके लिए नौजवान मरते हैं। राखी में बहन नहीं आई तो वह बहन के घर राखी बँधवाने खाली हाथ गया था। बहन ने राखी बाँध दी और कहा, तुम हमारी हँसी क्यों उड़वाते हो? वह दरअसल उसी क्षण मर गया था लेकिन उसने आत्महत्या रास्ते में की। हालाँकि बहन कोई अकेली वजह नहीं थी। बहन की तरह बहुत लोगों ने उसे मारा था। वह बहुत बार मरा था लेकिन आत्महत्या उसने रास्ते में की।" ⁵ वस्तुतः इस उपन्यास में लेखक ने युवाओं को बेरोजगार होने के कारण निराश, हताश, कुंठित और अवसाद की समस्या में दिखाया है।

अखिलेश ने अन्वेषण उपन्यास में रिश्तों का बेगानेपन को भी रेखांकित किया है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र 'मैं' भी इस समस्या से जूझता रहता है। इस तरह की अनेक घटनाएँ नायक को छिन्न-भिन्न कर देती हैं। इसलिए यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि इस उपन्यास में समाज में अपने परिवार से, मित्रों से, प्रेम के रिश्तों में बेगानापन दिखाई देता है। इस तरह उपन्यास में पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों का बिखराव दिखाई देता है। उपन्यास के पात्र देवेन्द्र की बहन का उसे अपमानित करना इसकी पुष्टि करता है। उपन्यास के पात्र 'मैं' और उसके दोस्तों के जीवन में झँकने पर यही दिखाई देता है। उन्हें भी समय-समय पर बेगानापन महसूस कराया जाता है। इस उपन्यास में पात्र 'मैं' को इलाहाबाद से बुलाया जाता है उसे यह तक भनक नहीं लगती कि उसके पिता रिटायर हो गये हैं। जिससे उसे महसूस होता कि वह इस घर के लिए बेगाना है। जब उसे उसके गाँव के मित्र सक्सैना और मुर्शिद मिलते हैं तो वह उनसे इस तरह बचता है जैसे वो उसके लिए बेगाने हैं। 'मैं' का पड़ोसी उसे घर ले जाने के लिए आता है तो वह घर जाने से इनकार कर देता है— "घर जाने में हिचक का एक कारण यह भी था कि बेरोजगारी के बाद हम घरों पर दोस्तों को बुलाने-बतियाने से कतराने लगे थे। हम अनुभव करते कि हम बोझ हैं। दोस्तों के लिए चाय बनाने के लिए कहने में हमारी जान निकल जाती। फिर भी नहीं कह पाते। किसी तरह कहा भी तो जो चाय पीते उसका जायका ही लापता हो जाता।" ⁶ उपन्यास का पात्र 'मैं' समाज से अपने को अलग ही महसूस करता है जिससे उसे समाज का सामना न करना पड़े— "क्या मैं लोगों से कटा हूँ? या लोग मुझसे कटे हैं? मैं लोगों से क्यों कटा हूँ? लोग मुझसे क्यों कटे हैं? दोनों का उत्तर एक है। सवाल अलग-अलग हैं मगर जवाब एक है।" ⁷

यही मनोदशा उपन्यास के अन्य युवा पात्रों की भी है। प्रियम अंकित अन्वेषण उपन्यास के पात्रों के जीवन में आए इसी कुंठा, अवसाद एवं बेगानेपन को इस रूप में देखते हैं "अवसाद की भयानक छाया से ग्रस्त वाचक अपने समुदाय से संवेदना के रिश्तों को खत्म करने से इंकार कर देता है। वाचक के माँ-बाप, उसका गाँव, उसके बचपन

के मित्र और भाई बंधु इस समुदाय का हिस्सा हैं। वाचक का अपने माँ और पिता से जो रिश्ता है, वह तमाम अवसाद, खीज और हीनता-बोध के बावजूद संवेदनात्मक तरलता से सराबोर है और संवेदनाएँ बेचैन करती हैं।¹⁸ ये सभी अपने-अपने स्तर पर अपनी स्थिति में सुधार के लिए संघर्षशील हैं। इसलिए ये लोग अनेक समस्याओं से घिरे हुए हैं। निष्कर्षतः अन्वेषण उपन्यास के पात्रों के जीवन में अनेक विषमताएँ विद्यमान हैं। बेरोजगार व्यक्ति के साथ कोई भी व्यक्ति संबंध रखना नहीं चाहता है। यहाँ तक कि स्वयं के परिवारजन भी अपने अपनों से दूरी बना लेने में ही भलाई समझते हैं। उपन्यासों के पात्रों के जीवन में आया रिश्तों का बेगानापन साफ तौर पर देखा जा सकता है। उपन्यास में बेरोजगार व्यक्ति से उसी के परिवार वाले भी दूरी बना लेते हैं। वस्तुतः युवा बेरोजगारी, अवसाद, संबंधहीनता तथा रिश्तों का बेगानापन आधुनिक मानवीय समाज की ज्वलंत समस्याएँ हैं, जिन्हें अखिलेश ने अपने इस उपन्यास में प्रमुखता से उठाया है। इस तरह हम देखते हैं कि अखिलेश ने अपने इस उपन्यास में आधुनिक भारतीय समाज के कई ज्वलंत एवं भयावह प्रश्नों को शिक्षित युवा वर्ग के जीवन और संघर्ष के माध्यम से उठाया है। जिन पर सोचना और विचार करना सभी के लिए आवश्यक है। निःसंदेह 'अन्वेषण' उपन्यास को पढ़ने के बाद पाठक वर्ग यही अनुभूत करता है। पाठक वर्ग का कथा एवं कथा पात्रों से भावनात्मक रूप से जुड़ जाना ही लेखक की वास्तविक सफलता है। जिसमें उपन्यासकार बहुत हद तक सफल रहे हैं।

संदर्भ

1. हरे प्रकाश उपाध्याय, बेरोजगारी का मार्मिक आख्यान, कथाकार अखिलेश : सृजन के आयाम, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद, 211003, प्रथम संस्करण 2017, पृ0सं0-277
2. अखिलेश, अन्वेषण, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992, पृ0सं0-76
3. अखिलेश, अन्वेषण, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992, पृ0सं0-99
4. रेणु व्यास, बेरोजगार युवा में मानस-प्रवेश, बनास जन (आख्यान में अखिलेश), प्रथम संस्करण 2015, पृ0सं0-288
5. अखिलेश, अन्वेषण, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992, पृ0सं0-97
6. अखिलेश, अन्वेषण, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992, पृ0सं0-94
7. अखिलेश, अन्वेषण, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992, पृ0सं0-98
8. प्रियम अंकित, लहलुहान होती संभावनाओं की गरिमा का अन्वेषण, कथाकार अखिलेश सृजन के आयाम, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद, 211003, प्रथम संस्करण 2017, पृ0सं0-180